कोहलर का अन्तःदृष्टि या सूझ द्वारा सीखना (Kohler's Insight Learning)

अन्त दृष्टि द्वारा सीखने के सिद्धान्त गेस्टाल्टवादी (Gestalist) मनोवैज्ञानिकों की देन है। इन मनोवैज्ञानिको में वरदी मीअर (Wertheimer), कोहलर (Kohler), कोफ्फका (KoFFKA) और लेवीन (Lewin) के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। गेस्टाल्ट (Gestalt) एक जर्मन शब्द है जिसके लिए आङ्ग्ल शब्दकोश मे कोई उपयुक्त पर्यायवाची शब्द नही□है। अतः इसे आङ्ग्ल मनोवैज्ञानिक साहित्य में ज्यों का त्यों ग्रहण कर लिया गया है।
गेस्टाल्ट का अर्थ एक आकृति का पूर्णता या समग्रता के रूप में लिया जा सकता है । गेस्टाल्टवादीयो के अनुसार **व्यक्ति किसी वस्तु को आंशिक रूप से नहीं अपितु पूर्ण रूप से सीखता है। वह वस्तू को एक इकाई के रूप में ही □खता है तथा उसके सम्पूर्ण रूप को ग्रहण करने के बा□ में उसके विभिन्न भागों पर दृष्टी डालता है।** इसी कारण किसी फूल को पूर्ण रूप में देख कर व समझ कर ही बाद में ही उसके विभिन्न अङ्गों का विश्लेषण करना अच्छा रहता है

वास्तविक अर्थों में गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिक सीखने को केवल प्रयास करते हुए भूल सुधारने अथवा उद्दीपन के प्रति सहज स्वाभाविक अनुक्रिया व्यक्त करने जैसा कार्य नही□मानते। **वे उसे एक उ□श्पूर्ण. अन्वेषणात्मक ओर रचनात्मक प्रक्रिया मान कर चलते हैं। उनके अनुसार सीखने वाला जो कुछ सीख रहा होता है, उसका समग्र रूप में प्रत्यक्षीकरण करता है तथा उसमें निहित संयोगो अथवा समायोजनो (Conections) का ठीक प्रकार विश्लेषण करता है। इस प्रत्यक्षीकरण और विश्लेषण के पश्चात वह बहुत ही समझ□ारी से किसी निष्कर्ष पर पहुचता है। इन** मनोवैज्ञानिक ने सीखने वाले द्वारा **सम्पूर्ण परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण (Perception of the total situation) और बुद्धिमत्तापूर्ण उचित अनुक्रिया व्यक्त करने (reacting intelligently) की योग्यता के लिए *अन्तः* दृष्टि (Insight) शब□ का प्रयोग किया।** ***अन्तः*** दृष्टि या *सूझ एक प्रकार की यह मानसिक योग्यता है जो मनुष्यों तथा उच्च श्रेणी के पशुओ□मै अधिक पाई जाती है। इसके द्वारा किसी भी समस्या का हल अचानक ही मस्तिष्क में आ जाता है*।

कोहलर ने वनमानुष और चिम्पेन्जियो की सीखने की प्रक्रिया का वर्णन करने में सबसे पहले इस शब्द Insight' का प्रयोग किया। उन्होंने अन्त-दृष्टि या सूझ द्वारा सीखने के नाम से प्रसिद्ध सिद्धान्त को प्रकाश में लाने के लिए कुत्ते, मुर्गियो, वनमानुष तथा चिम्पेन्जियो पर बहुत प्रयोग किए। इनमें से कुछ का वर्णन भी किया जा रहा है

1 अपने एक प्रयोग में कोहलर ने सुल्तान नामक चिम्पाञ्जी को पिजरे में बन्द कर दिया और पिञ्जारे की छत में केले को इस तरह लटका दिया कि वह उछलकर भी उसे प्राप्त न कर सके। पिञ्जारे में एक और एक लकड़ी का बक्सा रख दिया गया। सुल्तान ने उछल-उछल कर केले को प्राप्त करने के अनेक प्रयत्न किए परन्तु वह सफल नही□हुआ। लेकिन अचानक ही उसे एक विचार सूझा। उसने बक्से को लटकते हुए केले के नीचे रखा, उस पर चढ़ कर एक छलाङ्ग लगाई और इस तरह उसने कैले को प्राप्त कर लिया।

2 दूसरे प्रयोग मे कोहलर ने समस्या को कुछ अधिक कठिन बनाने का प्रयत्न किया। अब इसमें केले तक पहुचने के लिए छलाग लगाने में 2 बॉक्स की आवश्यकता प□ती थी। चिम्पैजी ने इस समस्या को भी पहले की तरह ही हल किया।

3 तीसरे प्रयोग मे केले को और अधिक ऊचाई पर लटकाया गया ताकि वह दोनो बक्सो का प्रयोग कर उछलने पर भी हाथ न आए। पिजरे में एक ओर □□ा रख दिया गया। इस प्रयोग में काफी देर तक चिम्पैजी दोनो बक्सो को रख कर उछल-कूद करता रहा। अचानक ही उसे तरकीब सूझी तथा उसने □□ का प्रयोग कर केले को प्राप्त कर लिया।फन

4. एक अन्य पेचीदे प्रयोग में भूखे चिम्पाजी को पिजरे में बन्द कर दिया गया तथा पिजरे में दो विशेष प्रकार के छोटे-बड़े □□ रख दिए गए जिनके सिरे एक-दूसरे में फसाकर एक लम्बा □□ा बनाया जा सकता था। पिजरे के बाहर केला इतनी दूर रखा गया कि चिम्पैंजी ने अपने हाथ पैरों को इधर-उधर चला कर केले को प्राप्त करने की चेष्टा की कुछ समय बाद एक-एक करके □□ों का प्रयोग किया परन्तु उसे सफलता नही□मिली। अपने असफल प्रयत्न के पश्चात वह चिम्पाजी □□ों से खेलने लगा अचानक ही उन दोनों □□ों के सिरे आपस में फस गये । फिर क्या था चिम्पैंजी ने तुरन्त समझ लिया कि अब लम्बे □□ से केला प्राप्त किया जा सकता है। उसने इस लम्बे □□ का प्रयोग किया और केला खीच कर खा लिया।

अपने इस प्रकार के प्रयोगों द्वारा कोहलर नें निष्कर्ष रूप में यह घोषणा की कि विभिन्न समस्याओ□को हल करने में उसके चिम्पैंजी ने प्रयास एव□त्रुटी विधि (TRIAL AND ERROR)का प्रयोग नही□किया उनके अनुसार चिम्पेंजीयो

ने सूझ (Insight) का प्रयोग कर अपनी समस्याओ□को हल करने में सफलता प्राप्त की।

चिम्पेंजीयो के सूझ या अन्तर्दृष्टि द्वारा सीखने के प्रमाण में कोहलर ने निम्न बाते कही-

(a) चिम्पेंजीयो ने परिस्थितियों का अपने समग्र रूप में प्रत्यक्षीकरण किया।

(b) परिस्थितियों में उपलब्ध सामग्री तथा समस्या के हर पहलू का गम्भीरतापूर्वक विश्लेषण कर उचित संबध स्थापित करने की चेष्टा की।

(e) अन्त में समस्याओ और उनसे सबधित पहलुओ को तुरन्त ही समझ कर उनका हल उनके मस्तिष्क में अचानक ही आ गया।

इन सब प्रयोगो ने यह प्रदर्शित किया कि सूझ द्वारा सीखने की प्रक्रिया में सीखने वालो के द्वारा होने वाला प्रत्यक्षीकरण किसी अवस्था में जाकर इस प्रकार सगठित हो जाता है कि उसे अपनी समस्या का कोई हल यकायक ही सूझ जाता है। इस प्रकार गेस्टाल्टवादियों ने उल्टे-सीधे प्रयत्नो द्वारा इधर उधर हाथ मार कर तथा अपनी भूलो को सुधार कर आगे बढ़ने के लम्बे मार्ग को छो□ कर मानसिक शक्तियों को ठीक प्रकार उपयोग में लाते हुए प्रत्यक्षीकरण के क्षेत्र में नवीन व्यवस्था करके समस्या का बोद्धिक समाधान □□ने पर बल दिया।